भक्त अकस्मात् आदर्श भागवत पथ से कभी गिर जाय, तो भी कोई उसका उपहास न करे। जैसा अगले श्लोक में स्पष्ट है, उसके पूर्ण कृष्णभावनाभावित होते ही ऐसे आकस्मिक पतन समाप्त हो जायेंगे।

अतएव जो पुरुष कृष्णभावना में स्थित है और निश्चयपूर्वक **हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे** महामन्त्र का जप करता है, वह यदि प्रसंगवश अथवा अकस्मात् दुर्घटना के कारण अपनी स्थिति से गिर जाय, तो भी उसे महात्मा ही समझना चाहिए। इस संदर्भ में **साधुरेव** (वह महात्मा) शब्द अति निश्चयात्मक है। इससे अभक्तों को चेतावनी दी गयी है कि वे आकस्मिक पतन के लिए भक्त का उपहास न करें; उसे साधु ही मानें। **मन्तव्यः** शब्द तो और भी अधिक बलपूर्ण है। इस श्लोक के विधान को न मानकर आकस्मिक पतन के लिए भक्त का उपहास करना भगवान् के आदेश की अवहेलना होगी। भक्त में केवल इतनी योग्यता होनी चाहिए कि भक्तियोग में उसकी अनन्य-अचल निष्ठा हो।

चन्द्रमा पर दिखायी देने वाले कलंक से चन्द्रिका प्रतिहत नहीं होती। इसी प्रकार साधुपथ से भक्त का प्रसंगवश गिर जाना उसे पापात्मा नहीं बना देता। परन्तु साथ ही, इस भ्रम में न रहे कि भगवत्-परायण भक्त सब प्रकार के निन्दनीय कर्मों में प्रवृत्त हो सकता है। इस श्लोक का तात्पर्य केवल विषय संसर्ग की प्रबलता के कारण घटित हुई दुर्घटना से है। भगवद्भक्ति करना वस्तुतः माया पर आक्रमण करना है। जब तक भक्त माया से लड़ने में पूर्ण रूप से समर्थ नहीं हो जाता, तब तक इस प्रकार की दुर्घटनाओं के घटित होने की सम्भावना रहेगी। परन्तु जैसा पूर्व में कहा जा चुका है, पूर्ण सशक्त हो जाने पर उसका फिर कभी पतन नहीं होता। इस श्लोक की आड़ में पापाचरण करते हुए कोई यह न समझे कि वह तब भी भक्त है। यदि भगवद्भक्ति के साधन से उसका चरित्र शुद्ध नहीं होता तो समझना चाहिए कि वह श्रेष्ठ भक्त नहीं है।

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति।।३१।।

क्षिप्रम्=अति शीघ्र; **भवति**=हो जाता है; **धर्मात्मा**=धर्मपरायण; **शश्वत्-शान्तिम्**=सदा रहने वाली परम शान्ति को; **निगच्छति**=प्राप्त करता है; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **प्रतिजानीहि**=निश्चयपूर्वक घोषणा कर; **न**=कभी नहीं; **मे**=मेरा; **भक्तः**=भक्त; **प्रणश्यति**=नष्ट होता।

अनुवाद

वह शीघ्र धर्मात्मा होकर सदा रहने वाली शान्ति को प्राप्त हो जाता है। हे अर्जुन! निश्चयपूर्वक घोषणा कर कि मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता।।३१।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण के इस कथन का अर्थ अन्यथा नहीं लगाना चाहिए। सातवें अध्याय में